INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(1): 01-05
Received: 02-10-2023
Accepted: 03-11-2023

डॉ. नीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

राम रूप त्रिपाठी
शोधार्थी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

चंदेलकालीन बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जल संरचनाएं

डॉ. नीता यादव, राम रूप त्रिपाठी

सारांश
पूर्व मध्यकाल में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चंदेल नामक क्षेत्रीय शक्ति का उदय होता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के जिले सम्मिलित है। चंदेलों का शासन 9वीं शताब्दी से शुरू होकर 16वीं शताब्दी तक शासन देखने को मिलता है। यह क्षेत्र हमेशा से पानी की कमी से जूझता रहा है। विंध्याचल पर्वतमाला इस क्षेत्र के बीच से गुजरती है। भौगोलिक रूप से इस क्षेत्र में पर्वतों, पहाड़ियों की अधिकता रही, जिसके कारण बरसाती पानी नदी, नालों मे बहकर चला जाता था। लेकिन यही पहाड़ियां जल को इकट्ठा करने के लिए अच्छे माध्यम थे। ऐतिहासिक काल में बरसाती पानी को सहेजने की कोशिशे शुरू हुई। चंदेल राजाओं ने दो पहाडियों के बीच पत्थर और मिट्टी का प्रयोग करते हुए बडे–बडे बाँधों का निर्माण करवाया। पहाडियों के नीचे अर्द्धचंद्रकार आकार के बाँध निर्मित किये गये जिनमें पहाडियों से आने वाला बरसाती पानी इकट्ठा होता था। पहाडीं किलों के अंदर विभिन्न प्रकार के तालाबों का निर्माण कर बरसाती पानी को संरक्षित किया गया था। पहाडियों के ऊपर ही प्राकृतिक पानी के जल स्त्रोंतो के पानी का जल संरचनाओं का निर्माण कर उन्हे संरक्षित किया गया। इन जल संरचनाओं के निर्माण ने जीवन निर्वाह हेतु कठिन भौगोलिक क्षेत्र को लोगों से आबाद किया।

कूटशब्द : जल संरचना, तटबंध, बाँध, तालाब, जलाशय, बावड़ी, सरिणी, कुण्ड, जोहड, बीहड, बुन्देलखण्ड, दुर्ग, चंदेल, विंध्याचल पर्वतमाला, कालिंजर

प्रस्तावना
धरती पर मानव, पशु–पक्षियों आदि के जीवित रहने के लिए जल एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बिना जल के मानव जीवन संभव नही है। शुरूआती समय से मानव ने जलस्त्रोंतो के नजदीक रहना शुरू किया। सभ्यताओं की शुरूआत से मानव ने जल संरक्षित करने और प्रबंधन के प्रयास शुरू कर दिये थे। मोहनजोदडो का प्रसिद्ध 'महान स्नानागार' इस दिशा मे हमें शुरूआती पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध कराता है। प्राचीन धार्मिक ग्रथों जैसे ऋग्वेद, अथर्ववेद इत्यादि में हमें जल के धार्मिक महत्व का पता चलता है। चंदेल राजाओं ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं को समझा और अभियांत्रिकी और तकनीकी का प्रयोग करते हुए विशाल बाँधों का निर्माण करवाया। चंदेलकालीन कारीगरों ने उन पहाडी क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया और दो पहाडियों के बीच के खाली स्थान पर पत्थर के खण्डों और मिट्टी का प्रयोग करते हुए तकनीकी की मदद से विशाल बांधों को निर्मित किया। यह बाँध और तालाब हमें महोबा, खजुराहों, कालिंजर, अजयगढ, मडफा, दुधई, बानपुर, इत्यादि जगहों पर प्रचुर मात्रा पर देखने को मिलते है।
बुन्देलखण्ड क्षेत्र विंध्य पर्वत की श्रेणियों, पहाड़ियों और ककरीला वनों वाला क्षेत्र हैं। इन्ही पहाड़ियों, खन्दकों, पटारों से अनेक नदी, नालों का निर्माण होता है। चंदेल राजाओं दो पहाडियों के बीच बाँध बनाकर, पहाड़ियों की ढलान पर बाँध बनाकर, बावडियों का निर्माण कर जल को संरक्षित कर उसका प्रबंधन किया।

कोटतीर्थ तालाब
कालिंजर का दुर्ग उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में पहाडी के ऊपर स्थित है। यहा पहाड़ी पर स्थित दुर्ग की जल की आवश्यकताओं हेतु अनेक तालाबों का निर्माण करवाया गया था। कोटतीर्थ कालिंजर दुर्ग का सबसे बडा और सुंदर तालाब है। यह पहाड़ी चट्टानों को काटकर निर्मित किया गया था। राजा कीर्ति वर्मन के दो प्रसिद्ध तालाब है पहला कोटतीर्थ और दूसरा कीर्ति सागर। नाम को कोटि–तीर्थ , या '' दस लाख तीर्थस्थल'' और कोथ–तीर्थ , या ''कुष्ठ तीर्थस्थल'' भी लिखा जाता है, जहां स्नान करने से कुष्ठ रोगी ठीक हो जाते है।[1] इसके नाम से पता चलता है कि यह

[1] ए कनिंघम, ए.एस.आई रिपोर्ट्स आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड रीवा इन 1883–84; एण्ड आफ ए टूर इन रीवा , बुन्देलखण्ड मालवा एण्ड ग्वालियर इन 1884–85(कलकत्ताः सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1885) पृ0 32

एक पवित्र तालाब था और यहा स्नान करने से कुष्ट रोग दूर होता है। यह तालाब कालिंजर दुर्ग के ऊपर सबसे बडा और सुंदर तालाबों में से है । यह आयताकार तालाब है। जल तक पहुॅचने के लिए चारों ओर सीढियों का निर्माण कराया गया था। इसमें पहाडी चट्टानों को काटकर जल इकट्ठा करने का रूप दिया गया है। इसके चारों ओर सुंदर पत्थर की दीवारें है जो इसकी सुंदरता को बढाती है। इसकी दीवार काफी ऊची है। पश्चिम दिशा में इसके साथ एक छोटी तलाइयां नुमा संरचना है। पास की ढलान से बरसाती पानी पहले इस तलाइयां में आता है फिर अतिरिक्त पानी कोटतीर्थ में चला जाता है। दोनों के बीच दीवार है तथा दीवार के मध्य भाग में पुलनुमा संरचना भी है, जिससे पानी कोटतीर्थ में आता है। तालाब की उत्तरी दीवारों में कुछ मूर्तियां दिखाई देती है। इस्लामिक शासनकाल में नई दीवार बनाकर इन मूर्तियों को ढक दिया गया। इसके किनारे कई मंदिर और महल भी निर्मित है जैसे दक्षिणी किनारे पर अमानसिंह का महल पश्चिमी किनारें पर मंदिर और उत्तरी किनारे पर बैठक। विनोद कुमार सिंह ने इसका उल्लेख किया है कि '' इसका आकार आयताकार है जिसकी लंबाई 190 मीटर और चौडाई 92 मीटर है। तालाब का पश्चिमी तटबंध जिगजैग तरीके से बनाया गया था। इसकी गहराई तटबंध के किनारे से 7.60 मीटर है।[2]''

बुढा–बूढी तालाब

यह कालिंजर दुर्ग का दूसरा सबसे बडा तालाब है। यह तालाब बूढा या बुढिया ताल कहलाता है। यह दो भागों में विभक्त है। मुख्य भागे मे गंधक युक्त प्राकृतिक जलधारा है जो त्वचा रोगो को दूर करता है। जल तक पहुचने के लिए चारों ओर से सीढियो का निर्माण करवाया गया था। पहले इसमें एक ही तालाब था। मदन वर्मन ने इसमें एक और तालाब का निर्माण कर जोड़ा ताकि देश के विभिन्न भागों के लोग नहाकर अपने कुष्ठ रोग को दूर करे और उन्हे पर्याप्त पानी सल्फर युक्त मिल सके। कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट मे वर्णन किया है ''पूर्व मुख के मध्य के पास एक प्राकृतिक गड्ढा है, जिसके तल में चट्टान में एक छोटा जलाशय खोदा गया है, जिसके चारों ओर सीढियां है। इसे बूढी या बुढिया ताल कहते है। ऐसा मान जाता है कि इसके पानी में बहुत बडी उपचार शक्तियाँ हैं, क्योकि कुष्ठ रोगी राजा कीरत ब्रिम या कीर्त्ति वर्म्मा ने स्नान करने के बाद खुद को ठीक पाया। इस राजा को आमतौर पर क्रिम कोठ या '' क्रिम कोढी '' कहा जाता है।[3]''

राम सागर तालाब, दूधई– दूधई ग्राम ललितपुर जिले में पहाडियों के बीच स्थित एक प्राचीन ग्राम है। चंदेलकाल से ही यह क्षेत्र धार्मिक एवं सास्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इसका प्राचीन नाम दुदाही था।[4]

चंदेल राजा यशोवर्मन के समय का बना हुआ विशाल राम सागर तालाब है, जो मघा नामक नाले पर बना हुआ है।[5] काप्र 94 । इसके दो तरफ पहाडियां स्थित है। जिसमें उत्तर दिशा की पहाडी में मंदिरों का समूह है तथा उत्तर–पूर्व में प्राकृतिक ढलान है। दक्षिण–पश्चिम दिशा में पत्थर के बडे–बडे टुकडों को तराशकर बाँध का निर्माण किया गया था। इसमें नीचे का आधार बडा तथा उसके ऊपर एक–एक पत्थर छोडकर बाँध की दीवार को बनाया गया था। इसका आधार चौडा और ऊपरी भाग सकरा है। पानी के दबाव को सहने हेतु इसे घुमावदार बनाया गया था। यह पत्थर और मिट्टी से निर्मित किया गया था। इसका भराव क्षेत्र सैकडों एकड का है। वर्तमान समय में इसके बाँध से दरार या अन्य कारण से पानी बाहर निकल जाता है और यह पूर्णतः भर नही पाता। इस बाँध से जल की गहराई 8 मी0 बाँध की चौडाई लगभग 15 मी0 है, यह अलग अलग स्थानों पर अलग–अलग है। बाँध लगभग चार सौ मी0 लम्बा है यह एक अनुमानित लंबाई है। प्राकृतिक ढलान एवं पहाडियों के जल से यह भर जाता था। इसके आस–पास कई विशाल मंदिरों का समूह है जिनमें हिंदू एवं जैन मंदिर समूह है। इसके आस–पास बस्ती रही थी जो इसके जल का उपयोग करती थी। इन मंदिरों के लिए भी यह जल का प्रमुख स्त्रोत था। इसके बाँध पर अनेक मंदिर है परन्तु वर्तमान मे वह खण्डहर अवस्था मे है। दूधई जैनों का प्रसिद्ध केन्द्र है। यहा जैनों के बहुत से मंदिर है।

तालाब के बाँध के पीछे अनेक पश्चिमी किनारे अनेक चौपरे (चौपाले कुएं) हैं जिनमें तालाब का पानी झिरकर आता है जिस कारण चौपरे हमेशा स्वच्छ जल से भरे रहतें हैं।[6]

कीरत सागर

महोबा नगर चंदेलों के प्रारंभिक निवास स्थानों में से एक है। महोबा में पहाडी क्षेत्र होने के कारण जल के संग्रहण और प्रबंधन की अत्यधिक आवश्यकता थी। अलग–अलग शासकों ने आवश्यकता और अपने नाम की यश प्राप्ति हेतु अनेक तटबंधों का निर्माण कर विशाल झीलनुमा जलाशयों का निर्माण करवाया। महोबा और उसके आस–पास इनके निर्माण हेतु भौगोलिक दशा अनुकूल थी और इसलिए इस पूरे क्षेत्र में हमे इनका विस्तृत फैलाव देखने को मिलता है।

कीरत सागर का निर्माण कीर्ति वर्मा(1053–1100ई.) ने करवाया था। किरतुआ तालाब के रूप में भी यह वहा के लोगो के बीच प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज चौहान द्वारा 1182 ई. राजा परमाल पर महोबा मे कजलियां विर्सजन के समय राजकुमारी चंद्रावल के अपहरण हेतु लडा गया युद्ध इसी कीरत सागर के तट पर लडा गया था। जिसमें आल्हा–ऊदल की शोर्य गाथा जगप्रसिद्ध हुई। कीरत सागर का निर्माण चंद्रावली की सहायक नदी चंदनौर के पानी को रोककर कर किया गया था।[77] सा.खा. पृ198। पहाडों से आने वाले पानी को रोकने के लिए बाँध का निर्माण किया गया। पत्थर के छोटे छोटे टुकडों और मिट्टी की सहायता से दीवाल का निर्माण किया गया। जब हम सडक के किनारे से दिखने वाले बाँध के पिछले हिस्से को देखते है तो हमें पत्थरों की व्यवस्थित दीवार दिखाई देती है। यह एक निश्चित आकार के थे और इन्हे एक निश्चित क्रमबद्ध तरीके से रखा गया था। यह क्रमबद्ध तरीका पत्थरों को आपस में बांधकर रखता है। इसी कारण से बिना चूना–पत्थर के यह हजारों साल से सुरक्षित है। पानी की ओर के पत्थर बाँध की मिट्टी को सीधे पानी के संपर्क मे आने से रोकते थे। बाँध पर सीढीदार

घाट मौजूद है। यह सीढियां बहुत लंबी आकार की है। चंदेलकालीन तालाबों की समानता यहा भी देखने को मिलती है जैसे की बाँध की चौडाई अधिक और ऊचाई कम रखना। बाँध की दीवाल मोडदार है। एक महत्वपूर्ण बात जो इस तटबंध को अन्य तटबंधों से अलग बनाती है वह इसमें इतने बडे स्तर पर घाटों और सीढियों का निर्माण है। इन घाटों की संख्या 10 है। वर्तमान समय में समय में सीढियों के पत्थर को चूने से जोडा गया है। चंदेल कालीन तटबंधों में इतने बडे स्तर पर सीढियां सामान्यतः देखने को नही मिलती। सामान्य तालाबों में यह बिना किसी मसाले के प्रयोग के प्रचुर मात्रा मे दिखती है। तटबंध पर आल्हा की बैठक बनी हुई है।

---

[2] विनोद कुमार सिंह, वाटरवर्क्स एट कालिंजर फोर्ट : एन आर्किआलाजिकल सर्वे, अतीत, स्पेशल इश्यू (2011), पृ0 83

[3] ए कनिंघम, ए.एस.आई रिपोर्ट्स आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड रीवा इन 1883–84; एण्ड आफ ए टूर इन रीवा , बुन्देलखण्ड मालवा एण्ड ग्वालियर इन 1884–85(कलकत्ताः सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1885) पृ0 31

[4] काशीप्रसाद त्रिपाठी, बुन्देलखण्ड के तालाबों एवं जल प्रबंधन का इतिहास,(नई दिल्लीः यश पब्लिकेशन, 2020) पृ0 94

[5] वही0 पृ0 94

[6] वही पृ 94

[7] साफिया खान, बिल्डिंग ट्रेडिशन्स इन बुन्देलखण्ड(पीएचडी थेसिस, ए.एम.यू., 2012) पृ0 198

साफिया खान का मानना ''विनोद कुमार सिंह के विपरीत है विनोद कुमार सिंह इसे प्राकृतिक झील मानते है । साफिया खान के अनुसार इस तटबंध के निर्माण के पहले पानी नीचे की ओर बहता था और पत्थर तथा मिट्टी के तटबंध के निर्माण के कारण बहते जल ने प्राकृतिक झील का रूप ले लेता है ।[8]'' इसकी लंबाई 745 मी0 है तथा इसकी मुख्य दीवार को मजबूत करने 30 मीटर दूर एक पीछे की दीवार बनाई गई थी जो वास्तव मे बाँध की चौडाई है।[9]''

तीसरे घाट के बाद निकासद्वार है जहां से नहर निकलती है जिसे कीर्त्ति नहर कहते है। निकासद्वार से पता चलता है कि जलाशय का तल पूर्व की ओर झुका है ताकि जलाशय के भरा न होने पर भी पानी को नहर में छोडा जा सके नहर की चौडाई 5. 50 मी0 है। निकास हेतु बनाया गया स्लूस आयताकार है और पत्थरों का बना है। इसकी चौडाई 5.50 मी0 है। झील की ओर स्लूस के खुलने की ओर इसमें ऊर्ध्वाधर खांचे है। खांचे के ठीक ऊपर, पानी की रिहाई को नियंत्रित करने के खांचे ढक्कन डालने के लिए एक संकीर्ण संकीर्ण मुख है । यहा यह भी कहा जा सकता है कि इस स्लूस की संरचना दिभोर में पाए गये स्लूस के समान है।[10]

बाँध के पास सिंचाई हेतु कुओं का भी निर्माण किया गया था। इस बाँध से सिंचाई कार्य भी होता था। इससे एक नहर भी निकाली गयी थी। ड्रेक और ब्राकमैन ने 1909 मे लिखा है कि झील के किनारे नहर के जल से 27 एकड़ जमीन की सिंचाई होती थी।[11]

अजयपाल तालाब, अजयगढ(पन्ना) सन् 830 ई. के लगभग चन्देल राजा जयशक्ति ने केदार पर्वत के शिखर पर अजेय दुर्ग 'जय दुर्ग' का निर्माण कर किला बनवाया था तथा किला के नीचे गोलाकार पहाड़ों के मध्य तराई में अजयगढ़ बस्ती बसाई थी।[12] अजयगढ चंदेलकालीन प्रमुख दुर्गों में से एक है। यह पन्ना जिले के प्रमुख कस्बे अजयगढ मे पहाडी पर स्थित है। दुर्ग की पानी की आवश्यकताओं मे इस तालाब का प्रमुख स्थान था। बस्ती की तरफ से सीढियों से चढने के बाद लगभग 500 मी0 अंदर पहाडी पर चलने के बाद यह तालाब मिलता है। यह तालाब पत्थरों को काटकर बनाया गया था। यह एक छोटा तालाब है जोकि बरसाती पानी के संग्रहण पर निर्भर था । इस तालाब का निर्माण आयताकार रूप में किया गया तथा इसके चारों ओर पत्थर के टुकडो की मदद से दीवार बनायी गयी थी। इसके दो तरफ सीढियो वाले घाट भी निर्मित किये गये थे। हालाकि इसमें बिना सीढियों के भी आसानी से पहुचा जा सकता है। तालाब के बीच में चट्टानें दिखाई देती है। तालाब के पास के क्षेत्र ऊचाई पर है जिससे बरसाती पानी इसमें इकट्ठा है। जल संरक्षण की यह अच्छी संरचना है। किले के अंदर यह जल का प्रमुख स्त्रोत था। इस तालाब में आज भी पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहता है। तालाब के किनारे कई मंदिर है जो ध्वस्त है। एक तरफ जैन मंदिर है तो दूसरी तरफ हिंदू मंदिर । किले की जलापूर्ति में इसका प्रमुख स्थान था।

वाराह की एक अच्छी मूर्ति, जिसके पूरे शरीर पर मानव आकृतियों की सामान्य पंक्तियां है, बडे घाट पर खडी है , यह स्पष्ट रूप से अपने वास्तविक स्थान पर नही है, इसमें कोई शिलालेख नही है, लेकिन खण्डहरों के बीच एक वाराह प्रतिमा की उपस्थिति के साक्ष्य जलाशय की तारीख के बारे में एक सुराग देता है, जिसे वाराह की पूजा के प्रचलन से बाहर होने के पहले बनाया गया होगा, और इस पर मै तालाब की खुदाई और मंदिर के निर्माण का समयकाल, नवीनतम रूप से, खजुराहा के मिरतंग महादेव के निकट लक्ष्मण जी मंदिर के समयकाल के लगभग या लगभग 11वीं शताब्दी संवत् का निर्धारित करूंगा।[13]

परमाल तालाब

यह तालाब गहरी चट्टानों के बीच स्थित है। इसके तीन ओर बडी–बडी चट्टानें है तथा एक भाग से आसानी से पहुचा जा सकता है। इसको देखने से यह अनुमान लगता है कि तीन ओर से प्राकृतिक चट्टानों से घिरा होने के कारण, इसमें स्वतः ही बरसात का पानी इकट्ठा होता रहा होगा । बाद के समय में इसकी चट्टानों को काटकर इसको तालाब के रूप में निर्मित किया गया। इसके दक्षिणी भाग में सीढियां तथा घाट है। इसके पश्चिमी भाग में पत्थरों को सुडौल काटकर दीवार का निर्माण किया गया था। यह बहुत गहराई वाला व विषम परिस्थितियों में निर्मित तालाब है। इसके उत्तरी भाग में तीन बडे चंदेली मंदिरों एवं पूर्वी भाग में एक बडे चंदेली मंदिर का निर्माण करवाया गया था। यह जंगलों और चट्टानों से घिरा सुंदर तालाब है। किले की जलव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण स्थान था। इसके आस–पास मंदिरों की उपस्थिति के कारण इसका धार्मिक उपयोग भी था। तालाब का पानी आज भी साफ है परंतु आज के समय में इसका कोई उपयोग नही है। एक ही दिशा से इसका उपयोग आसानी से संभव है अन्य दिशाओं से इसका उपयोग कठिन है।

कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट ने उल्लेख किया है कि ''मंदिर के पास का तालाब बडा नही है, लेकिन बहुत गहरा बताया जाता है, इसके किनारों को विशाल ऊर्ध्वाधर दीवारो और घाटों से समर्थित किया गया है, दीवारे संकीर्ण सीढियों से ऊपर की ओर घटती है, घाट की सीढियां बडी और चौडी है, घाट की सीढी पर एक स्लैब पर मेरी नजर एक अंकित तिथि पर पडी , जिसे मैने संवत् 1269 पढा, अक्षर एक और दो पर कोई संदेह नही है। एक अन्य पत्थर पर मैने राहिल ब्रिम, या वर्म्मा का नाम पढा, जो चंद के अनुसार, परमाल के मंत्री थे, और जैसाकि शिलालेख पत्थर पर है जोकि अतिरिक्त भाग या पुनरोद्धार या मरम्मत की गयी दीवार का हिस्सा है, जो यहा दिखाया गया, और अभी भी कमजोरी के संकेत दिख रहे है, मै शिलालेख को उसके द्वारा किए गए टैंक के मरम्मत के कार्य के रूप में स्वीकार करता हू।[14]''

अजयगढ की सरिणी

"अजयगढ़ दुर्ग के अन्दर, रानियों के तैरने, स्नान करने के लिए 2 केलि सारिणी (स्विमिंग पूल) बनी हुई हैं। जिन्हे पहाड के पत्थर काटकर बनाया गया था। इनमें चंदेल रानिया तैरकर स्नान का आनंद उठाया करती थी।[15]"

द्वारों पर शिलालेखों के अलावा , चढाई की चट्टानों पर कई अन्य शिलालेख भी पाये गये, जिनमें से सबसे बडा शिलालेख ''गंगा जमना'' के प्रवेश द्वार पर है। यह दो समीपस्थ गुफाओं को दिया गया नाम है जिन्हे पानी की आपूर्ति हेतु चट्टानों को काटकर बनाया गया था, इन कोष्ठको के अंदर का झरना इनको पानी से भरा रखता है, जो कि उल्लेखनीय रूप से शुद्ध है, इस

[8] साफिया खान, बिल्डिंग ट्रेडिशन्स इन बुन्देलखण्ड(पीएचडी थेसिस, ए.एम.यू., 2012) पृ0 199

[9] वही 199

[10] वनोद कुमार सिंह, प्री मेडिवल चंदेलाज वाटरवर्क्स एट महोबा : ए स्टडी आफ हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलाजी, अतीत, स्पेशल इश्यू (2011), पृ0 50

[11] साफिया खान, बिल्डिंग ट्रेडिशन्स इन बुन्देलखण्ड(पीएचडी थेसिस, ए.एम.यू., 2012) पृ0 200

[12] काशीप्रसाद त्रिपाठी, बुन्देलखण्ड के तालाबों एवं जल प्रबंधन का इतिहास,(नई दिल्लीः यश पब्लिकेशन, 2020) पृ0 80

[13] जे.डी. बेगलर, ए. कनिंघम, रिपोर्ट आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा, 1871–72; एण्ड द सेंट्रल प्रोविंस, 1873–74,(कलकत्ताः सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1878) पृ0 48

[14] जे.डी. बेगलर, ए. कनिंघम, रिपोर्ट आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा, 1871–72; एण्ड द सेंट्रल प्रोविंस, 1873–74,(कलकत्ताः सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1878) पृ0 47–48

[15] काशीप्रसाद त्रिपाठी, बुन्देलखण्ड के तालाबों एवं जल प्रबंधन का इतिहास,(नई दिल्लीः यश पब्लिकेशन, 2020) पृ0 80

संबंध में ग्वालियर के जलाशयों से पूरी तरह से भिन्न है, जो एक नियम के रूप में बहुत गंदे है।[16]

किले के प्रवेशद्वार पर ही दो सरिणी है । इनमें से एक वर्गाकार है। इसके अंदर जल का प्राकृतिक स्त्रोत है। चट्टानों को काटकर इसे पहाड के अंदर बनाया गया है। इसके प्रवेश द्वार की चौडाई और लंबाई 1.37 मी0 x 1 मी0 है। यह किले की ताजे पानी की आपूर्ति का प्रमुख स्त्रोत था। इसके अंदर पत्थर के खण्डों के स्तंभ भी है। इसके द्वार को पत्थर के शिलाओं से निर्मित किया गया है। इसका पूरा हिस्सा पहाड के अंदर निर्मित है।

दूसरी सरिणी भी इसी तरह की निर्मित की गई थी। इसके प्रवेश द्वार की चौडाई 1.84 मी0 और लंबाई 1.10 मी0 है। इसको भी पहाड के अंदर चट्टानों को काटकर निर्मित किया गया था। अंदर प्रस्तर के खण्डों के खंभे नजर आते है।

चोपड

बुन्देलखण्ड क्षेत्र का यह अपने आप में अनोखा एवं अद्वितीय है। ऐसा चोपड हमें कही और देखने को नही मिलता है। चोपड़ा के किनारे लगे ए.एस.आई. के सूचना पट के अनुसार ''यह मंदिर खजुराहों के पश्चिमी मंदिर समूह से लगभग 183 मी0 की दूरी पर स्थित है। चोपड़ा कुंड चौकोर आकार का है और यह एक तीन मंजिला सीढीदार कुंड है, इस कुंड के बीच में एक मंदिर बनाया गया है। यह मंदिर लगभग पूरे वर्ष की लंबी अवधि तक पानी में रहता है इसलिए इसे खजुराहो का जलमग्न मंदिर कहा जा सकता है। यह मंदिर बलुआ पत्थर से बना है। यह लगभग 11 वीं शताब्दी ई॰ में बनाया गया था।''

इस मंदिर की संरचना का ऊपरी एक खण्ड पूरा तथा बीच के खण्ड का ऊपरी भाग दिखायी पडता है। गर्मियों के समय बीच का खण्ड और ज्यादा दिखाई पडता होगा। इसमे चार खंभों पर पत्थर रखकर मण्डप निर्मित किया गया है। बडे–बडे प्रस्तर खण्डों एवं नीचे की ओर सीढियो में सुंदर गढे पत्थरों से निर्मित है। सीढियों हेतु पत्थरों को तराशा गया था और समान आकार में यह दिखाई देती है। चारों दिशाओं में यह सीढियां निर्मित है। कुण्ड़ मे इन सीढियों के माध्यम से उतरा जा सकता था। इस कुण्ड़ का अधिकतर भाग ध्वस्त हो चुका है। ऊपरी भाग का निर्माण और सीढियां ध्वस्त हो चुकी है। चोपड़ा के चारों ओर चारों ओर लाखौरी ईटों की प्लास्टर वाली छोटी दीवार निर्मित है जोकि शायद सुरक्षा की दृष्टि से निर्मित की गई थी। यह दीवार पुरानी नजर आती है परंतु इसका प्लास्टर नया मालूम होता है। इस दीवार को अगर आधार माने तो इसकी लम्बाई तथा चौडाई 20x19 मी0 तथा 19.90x19.70 मी0 है।

सूरजकुण्ड

यह एक वर्गाकार कुण्ड है। पत्थरों को तराशकर इसके चारों ओर लगाकर वर्ग का रूप दिया गया था। इस कुण्ड मे जाने हेतु चारों ओर से सीढियां है जिनकी सीढियों की संख्या छः है। सीढियों के दायें और बायें के किनारे पर छोटे–छोटे देवालयनुमा संरचनाएं है हालाकि यह सुंदरता हेतु था या इसका इसका कोई और उपयोग रहा हो। नीचे उतरने पर पुनः पत्थरों को तराशकर वर्ग का रूप दिया गया। पानी तक उतरने के लिए सीढीनुमा प्रस्तरखण्ड है। स्थानीय लोग इसके जल का स्त्रोत भूमिगत बताते है। राहिल सागर के पास ही स्थित होने के कारण इसका जल स्तर हमेशा नजदीक रहता है। सूर्य मंदिर के पास होने के कारण यह धार्मिक महत्व का रहा होगा। इसकी घाटनुमा सीढियां काफी अलग नजर आती है। इसकी माप 19.80X20.10 मी0 है।

चित्र सं0 1: कोटतीर्थ तालाब, कालिंजर (बांदा)

चित्र सं0 2: बूढा–बूढी तालाब, कालिंजर (बांदा)

चित्र सं0 3: राम सागर बाँध, दूधई (ललितपुर)

चित्र सं0 4: कीरत सागर, महोबा

[16] जे.डी. बेगलर, ए. कनिंघम, रिपोर्ट आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा, 1871–72; एण्ड द सेंट्रल प्रोविंस, 1873–74,(कलकत्ताः सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1878) पृ0 47

चित्र सं0 5: अजयपाल तालाब, अजयगढ (पन्ना)c

चित्र सं0 6: परमाल तालाब, अजयगढ (पन्ना)

चित्र सं0 7: सरिणी 1, अजयगढ (पन्ना)

चित्र सं0 8: सरिणी 2, अजयगढ (पन्ना)

चित्र सं0 9: चोपड, खजुराहो

चित्र सं0 10: सूरजकुण्ड, महोबा

संदर्भ

1. कनिंघम, ए . एएसआई रिपोर्ट्स आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड रीवा इन 1883–84; एण्ड आफ ए टूर इन रीवा , बुन्देलखण्ड मालवा एण्ड ग्वालियर इन 1884–85, कलकत्ता: सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1885
2. 2 सिंह, विनोद कुमार, वाटरवर्क्स एट कालिंजर फोर्ट: एन आर्किआलाजिकल सर्वे, अतीत, स्पेशल इश्यू (दिसम्बर 2011), पृ0 81–91
3. 3 त्रिपाठी, काशीप्रसाद. बुन्देलखण्ड के तालाबों एवं जल प्रबंधन का इतिहास, नई दिल्ली: यश पब्लिकेशन, 2020
4. 4 साफिया खान, बिल्डिंग ट्रेडिशन्स इन बुन्देलखण्ड: 1000 एडी.–1700 एडी.. पीएचडी थेसिस, ए.एम.यू., 2012 http://hdl.handle.net/10603/55625
5. 5 सिंह, विनोद कुमार. प्री मेडिवल चंदेलाज वाटरवर्क्स एट महोबा : ए स्टडी आफ हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलाजी, अतीत, स्पेशल इश्यू (दिसंबर 2011), पृ0 45–65
6. बेगलर, जे.डी, ए. कनिंघम, रिपोर्ट आफ ए टूर इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा, 1871–72; एण्ड द सेंट्रल प्रोविंस, 1873–74,कलकत्ता: सुप्रीडेंट आफ गवर्नमेंट प्रिटिंग,1878